

CSIR in Media



75 Years of
CSIR Touching Lives

A Daily News Bulletin
22nd June 2017



Indian Tomato varieties to take root in Ghana

CSIR

22nd June 2017

M SOMASEKHAR

Hyderabad, June 21

Indian tomato varieties are all set to be grown in Ghana, after pilot studies have demonstrated higher yields and better taste.

An Indo-Ghana Pilot Research project for Tomato Production, launched in 2015, was declared successfully completed last week. The research highlights were shared and the two sides agreed to replicate and expand the cultivation of tomatoes.

The National Research Development Corporation (NRDC) led the effort, with the Government of Ghana providing three plots of five acres each in different regions of the West African country. Field trials began in 2015 in Kumasi, Ada and Navrongo. "In addition to high yields, the Indian varieties gave better internal qualities and a



shelf life of more than two weeks," according to H Purushotham, CMD of the Corporation. The Indian effort was focussed on sensitising farmers in Ghana with high-yielding varieties and the latest farm techniques that would be suitable to West African soil. Accordingly, cultivation in green-

houses and on open fields was taken up using different seeds, fertilisers, irrigation methods, he told *BusinessLine*.

Ghana imports about 60 per cent of its requirement of tomatoes from neighbouring countries. In May 2010, it made a formal request seeking India's expertise to take up a research

project. That was followed up with an MoU in January 2013 between the NRDC and the CSIR, Ghana.

With financial support from the Ministry of External Affairs, the NRDC took up implementation in 2015 in different agro-climatic regions of Ghana. In the same year, as part of the Africa Summit in India, the MEA had firmed up the bilateral \$2-million project.

At the concluding event of the project in the auditorium of the CSIR-Science & Technology Policy Research Institute (STEPRI), Ghana, attended by Mavis Hawa Koomson, Minister for Special Development Initiatives, BS Yadav, High Commissioner of India, Girish Sahni, DG, CSIR India and scientists and officials from both sides stressed the need for replicating the project on larger areas, Purushotham said.

Published in

Business Line, Page 15

CSIR-NEERI

22nd June 2017

गंगा के औषधीय गुणों पर अध्ययन पूरा

16

■ नई दिल्ली।

पौराणिक काल से ब्रह्म द्रव्य के रूप में प्रचलित गंगा नदी के औषधीय गुणों एवं प्रवाह मार्ग पर जल के स्वरूप एवं इससे जुड़े विभिन्न कारकों एवं विशेषताओं का पता लगाने के लिए सरकार द्वारा शुरू कराया गया अध्ययन कार्य पूरा हो चुका है और इसकी रिपोर्ट सरकार को सौंप दी गई है। यह अध्ययन 'राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग शोध संस्थान' (नेरी) ने किया है।

जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्री उमा भारती ने कहा, 'गंगा नदी में औषधीय गुण हैं जिसके कारण इसे ब्रह्म द्रव्य कहा जाता है और जो इसे दूसरी नदियों से अलग करता है। यह कोई पौराणिक मान्यता का विषय नहीं है, बल्कि इसका वैज्ञानिक आधार है। इस बारे में 'नेरी' ने अपनी रिपोर्ट सौंप दी है। उन्होंने कहा, 'अब हम इसके स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में अध्ययन कर रहे हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि गंगा नदी के औषधीय गुणों एवं प्रवाह मार्ग से जुड़े कारकों के अध्ययन का दक्षिण 'राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग शोध संस्थान' (नेरी) को दिया गया था। इसके लिए तीन मौसमों के

अध्ययन की जरूरत थी और इसके उपरान्त संस्थान ने अपनी रिपोर्ट पेश कर दी है।

इस अध्ययन को केंद्र को तीन चरणों में पूरा करना था, जिसमें शीतकालीन, पूर्व मानसून और उत्तर मानसून मौसम में गंगा नदी के 50 से अधिक स्थलों पर नमूनों का परीक्षण किया गया है। इस अध्ययन एवं अनुसंधान परियोजना को फंडिंग महानो में पूरा किया जाना था। इस अध्ययन में गंगा जल के विशेष गुणधर्मों के स्रोतों को पहचानने की प्रक्रिया थी। इसी तरह नदी के पानी में मिलने वाले प्रदूषित जल के अनुपात से होने वाले दुष्परिणामों का पता लगाना भी एक हिस्सा था।

उमा भारती ने कहा कि गंगा नदी के औषधीय गुणों के बारे में वरिष्ठ शिक्षाविद प्रो. भार्गव का सिद्धांत भी है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि इसके पीछे यह कारण बताया गया है कि हिमालयी क्षेत्र औषधीय पादपों से भरा हुआ है जो शीत ऋतु में बर्फ से ढके जाते हैं। बाद में बर्फ पिघलने के बाद ये औषधियां पानी के साथ गंगा नदी में मिल जाती हैं। इस अध्ययन में इस बात का भी पता लगाने का प्रयास किया गया कि गंगा नदी के जल में औषधीय गुण मौजूद हैं या धीरे-धीरे खत्म हो रहे हैं।

इसके अलावा गंदगी एवं जलमल के प्रवाह से जुड़े विषयों का भी अध्ययन किया गया। इसमें गोमुख से गंगा सागर तक जल प्रवाह से जुड़े तत्वों का भी अध्ययन किया जा गया है। इसके तहत टिहरी से पहले और टिहरी के बाद, नरौरा से पहले और नरौरा के बाद, कानपुर से पहले और कानपुर के बाद, पटना से पहले और पटना के बाद पानी के स्वरूप में बदलाव पर विचार किया गया।

जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्रालय का कहना है कि इस पवित्र नदी में प्रत्येक वर्ष अनेक धार्मिक अवसरों पर करोड़ों लोगों द्वारा डुबकी लगाने के बावजूद इस नदी से कोई बीमारी या महामारी नहीं फैलती है। इसका कारण इस नदी के जल में अपने आप सफाई करने की कोई अद्भुत शक्ति है जो इसके पानी में सड़न को रोकती है। इस अध्ययन से गंगा जल का उसके विशिष्ट गुणों के कारण मानव जाति के कल्याण और स्वास्थ्य के लिए उपयोग करने में मदद मिलेगी। इस विषय पर ब्रिटिश जैवगुण विशेषज्ञ अर्नेस्ट हेनवरी हेंकिन के संदर्भों का हवाला दिया जाता है जिनके अनुसार इस नदी के जल में जीवाणुभोजी गतिविधियों की उपस्थिति का बहुत पहले ही पता चल चुका है। (भाषा)

Published in

Rashtriya Sahara, Page 16

CSIO to assist Ethiopia in metal technology

CSIR-CSIO

22nd June 2017

TRIBUNE NEWS SERVICE

CHANDIGARH, JUNE 21

An eight-member delegation of industrialists and academicians from Ethiopia visited Central Scientific Instruments Organisation (CSIO) here today. This visit is a part of twinning agreement between the Council for Scientific and Industrial Research (CSIR) and Ethiopia's Metal Industries Development Institute (MIDI) to enhance the competitiveness of the metals and engineering industries with the help of training and know-how imparted by scientists.

The delegation, led by Ethiopian minister of education Teshome Lemma, visited various sections of the CSIO which were of relevance to the African industry. They were given

presentation and demonstrations about the CSIO's core competence and technical facilities.

The CSIO will impart modular training on statistical tool usage, precision bench work, conventional machining, electrical discharge machining, wire cutting, jig boring and grinding, maintenance management, electronics workshop techniques, electrical and electronics measurement, and process control and automation.

In addition, the CSIO will assist the MIDI in creating technical facilities in some of the aforementioned areas and provide guidance for higher degree courses to be conducted in Ethiopia like master's programme on mechatronics.

Published in

The Tribune

The Indian Express

Hindustan Times

The Times of India

CSIR-CEERI

21st June 2017

इथोपिया के शिक्षा मंत्री पिलानी आए

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

rajasthanpatrika.com

पिलानी. भारत ज्ञान का भण्डार है। यहां के शिक्षक विश्व भर के शैक्षणिक संस्थानों में अध्यापन करवा कर उजियारा फैला रहे हैं। यह कहना है इथोपिया के राज्य शिक्षा मंत्री तेशोमा लेम्मा का। शिक्षा मंत्री तेशोमा लेम्मा भारतीय वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् एवं इथोपियाई सरकार के मध्य पिछले दिनों हुए एक समझौते के तहत कस्बे के सीरी संस्थान में आयोजित एक कार्यक्रम में बोल रहे थे।

उन्होंने दोनों देशों में समानता बताते हुए भारतीय कौशल की प्रशंसा की तथा भारत के शिक्षा, व्यापार, तकनीक अनुसंधान एवं कम्प्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में उत्तरोत्तर विकास की सराहना की। तेशोमा लेम्मा ने इथोपिया की अर्थव्यवस्था को विकसित अर्थव्यवस्था बनाने के लिए प्रौद्योगिकीय सहयोग की आवश्यकता जताई।

भारतीय कौशल से इथोपिया की युवा पीढ़ी को मिलने वाले मार्ग दर्शन-प्रशिक्षण की जानकारी दी। इथोपिया के औद्योगिक रीसर्च



पिलानी. सीरी संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित इथोपियाई देश के प्रतिनिधि मण्डल तथा सीरी संस्थान के वैज्ञानिक।

संस्थान के महानिदेशक वर्कनेह डेलेमन ने भारत की औद्योगिक एवं तकनीकी उन्नति पर खुशी जताते हुए भारतीय वैज्ञानिकों के अनुभव से इथोपियो के उद्योग जगत को मिलने वाली प्रगति को रेखांकित किया। इससे पहले सीरी संस्थान के निदेशक प्रो. शांतनु चौधरी ने दोनों देशों के मध्य हुए समझौते की जानकारी दी तथा भारतीय वैज्ञानिकों खास कर सीरी संस्थान द्वारा सामाजिक उत्थान, चिकित्सा, खगोल विज्ञान एवं परिवहन सहित विभिन्न क्षेत्रों में किए गए नवीन अनुसंधानों की जानकारी दी।

संचालन संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एस्ए अकबर ने किया। इससे पहले इथोपियाई

प्रतिनिधि मण्डल के संस्थान में पहुंचने पर सीरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पीसी पंचारिया, डा. रामप्रकाश, डॉ. अजय अग्रवाल एवं डॉ. निधि चतुर्वेदी सहित ने प्रतिनिधि मण्डल का भारतीय परम्परागत शैली में स्वागत किया। गौरतलब है कि पिछले दिनों इथोपियाई सरकार ने देश के वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के साथ अनुबंध कर वैज्ञानिक समुदाय से सहयोग मांगा है। अनुबंध के तहत सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं में इथोपिया के वैज्ञानिकों तथा उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया जा सकेगा।

Published in

Rajasthan Patrika

Dainik Bhaskar

Prime Minister Narendra Modi evinces interest in research work at CDRI Lucknow

CSIR-CDRI

21st June 2017



During his nearly 50-minute stay at the institute, Modi interacted with scientists, trying to understand work being done by them with regard to researches on new drugs.

Prime Minister Narendra Modi visited the CSIR-Central Drugs Research Institute (CDRI) on Tuesday and evinced keen interest in the research work conducted by the institute.

During his nearly 50-minute stay at the institute, Modi interacted with scientists, trying to understand work being done by them with regard to researches on new drugs. He even used a microscope to follow the experiments.

The Prime Minister, who is also president of CSIR labs across the country, enquired as to how scientists could help make people happy.

“We briefed the Prime Minister about CDRI’s past, present and future and he gave his blessings to all us for our endeavours for new researches,” said Madhu Dixit, director, CDRI.

“We especially briefed the PM about the good results of the ‘Reunion’ a new drug launched by us to deal with fractures in any part of the human body,” she added.

The institute also organised a science exhibition highlighting the premiere institute’s contribution to drug research and development.

The Prime Minister visited two important laboratories. He first went to the Molecular and Structural Biology lab headed by Dr R Ravishankar. He was informed that CDRI has solved the 3D structures of many proteins using X-ray crystallography technique.

Ravishankar said, “Using supercomputers, we have identified several inhibitors of these proteins. This information is then used to develop new drugs against infectious diseases like TB, and malaria that affect poor Indian population.”

Replying to a question by the PM, Ravishankar explained that structures of even natural products could be determined.

Answering another query about enhancing the nutrition quality of foodgrains, he explained that molecular and genetic techniques could be used to improve the nutritional quality of agricultural plants.

Modi then visited the compound repository, botany, and natural products labs of CDRI where he was updated about how CDRI was developing new drugs using traditional knowledge of medicinal properties of plants. He also planted a sapling at CDRI.

The CDRI has the distinction of developing 13 out of 20 drugs launched so far in India.

Published in:

[Hindustan Times](#)

Navbharat Times

[Bio Spectrum India](#)